RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अगस्त
28
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

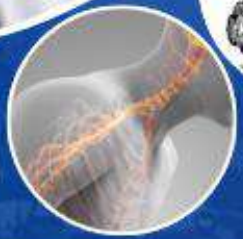

By Ankit Avasthi Sir

त्वचा कैंसर ऑस्ट्रेलिया में ज़्यादा क्यों ? / Why is skin cancer more common in Australia?

संदर्भ:

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेट कप्तान माइकल क्लार्क त्वचा कैंसर से जूझ रहे हैं। 44 वर्षीय क्लार्क ने हाल ही में नाक से कैंसर का घाव हटवाने के लिए सर्जरी करवाई और सोशल मीडिया पर लोगों को समय रहते जांच कराने की सलाह दी। ऑस्ट्रेलिया में त्वचा कैंसर के मामले दुनिया में सबसे ज्यादा हैं, जिससे जागरूकता बेहद जरूरी है।

ऑस्ट्रेलिया में त्वचा कैंसर: एक गंभीर स्वास्थ्य संकट

ऑस्ट्रेलिया दुनिया में त्वचा कैंसर की सबसे ऊँची दर वाला देश है। हर साल यहाँ लगभग **2,000 लोगों की मौत** होती है और करीब **7,50,000 लोगों** का निदान और उपचार किया जाता है। अनुमान है कि हर **तीन में से दो ऑस्ट्रेलियाई** अपने जीवनकाल में किसी न किसी रूप में त्वचा कैंसर का सामना करेंगे।

क्यों ऑस्ट्रेलिया है सबसे बड़ा हॉटस्पॉट?

- **भौगोलिक स्थिति:** ऑस्ट्रेलिया भूमध्य रेखा के काफी करीब है, जिससे सूर्य की अत्यधिक **पराबैंगनी किरणें (UVR)** त्वचा को नुकसान पहुँचाती हैं।
- **जनसांख्यिकी कारण:** देश में **गोरी त्वचा वाले यूरोपीय मूल** के लोग अधिक हैं। गोरी त्वचा UV किरणों से आसानी से जलती है और DNA को नुकसान पहुँचाती है।
- **जीवनशैली और संस्कृति:** धूप और समुद्र तट केंद्रित जीवनशैली, आउटडोर गतिविधियां और खेलों के चलते लोग लंबे समय तक सीधी धूप में रहते हैं।

इस वजह से **ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड** में दुनिया के सबसे अधिक त्वचा कैंसर के मामले दर्ज किए जाते हैं।

त्वचा कैंसर (Skin Cancer) –

त्वचा कैंसर वह स्थिति है जिसमें त्वचा की असामान्य कोशिकाएँ अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती हैं, जिससे **कैंसरयुक्त ट्यूमर (malignant tumors)** बनते हैं जो आसपास की ऊतक में घुस सकते हैं या शरीर के अन्य हिस्सों में फैल सकते हैं।

सबसे आम प्रकार हैं:

- **बेसल सेल कार्सिनोमा (BCC):** बेसल कोशिकाओं से उत्पन्न।
- **स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा (SCC):** स्क्वैमस कोशिकाओं से उत्पन्न।
- **मेलानोमा:** मेलानोसायट्स से उत्पन्न, कम आम लेकिन अधिक आक्रामक।

मुख्य कारण:

- **UV विकिरण (UV Radiation):** सूर्य की पराबैंगनी किरणें, टैनिंग बेड्स और सनलैम्प से उत्पन्न UV किरणें त्वचा की डीएनए को नुकसान पहुँचाती हैं।
- **आनुवंशिक कारण (Genetic Factors):** कुछ जीन उत्परिवर्तन भी त्वचा कैंसर के विकास में योगदान देते हैं।

त्वचा कैंसर के प्रकार:

बेसल सेल कार्सिनोमा (BCC)

- सबसे आम प्रकार।
- धीरे बढ़ता है, लेकिन इलाज न होने पर आसपास की ऊतक को नुकसान पहुँचा सकता है।

स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा (SCC)

- आम प्रकार।
- त्वचा की सतह पर स्थित स्क्वैमस कोशिकाओं से उत्पन्न।

मेलानोमा (Melanoma)

- कम आम, पर अधिक तेज़ी से बढ़ता और फैलता है।
- अन्य प्रकारों की तुलना में अधिक खतरनाक।

लक्षण (Symptoms)

- नया तिल या किसी पुराने तिल का आकार, रंग या रूप बदलना।
- त्वचा पर नया ग्रोथ (growth)।
- चमकदार, लाल या त्वचा के रंग का धब्बा; सूखी, खुरदरी या परतदार त्वचा।
- खुजली या रक्तस्राव वाला धब्बा।

निदान और उपचार (Diagnosis and Treatment)

निदान:

- किसी भी संदिग्ध त्वचा परिवर्तन पर **डर्मेटोलॉजिस्ट** से संपर्क करें।
- त्वचा बायोप्सी: ऊतक का छोटा नमूना निकालकर माइक्रोस्कोप के तहत जांच।

उपचार:

- प्रकार, स्थिति और कैंसर के चरण पर निर्भर।
- विकल्प: शल्य चिकित्सा, रेडिएशन थेरेपी, टॉपिकल ट्रीटमेंट, सिस्टमिक दवाएँ, फोटोडायनामिक थेरेपी।

रोकथाम (Prevention)

- **सूर्य संरक्षण:** सीधे सूर्य में समय कम बिताएँ, सनस्क्रीन का प्रयोग करें।
- **नियमित जांच:** त्वचा पर नए या बदलते धब्बों की नियमित जाँच करें।

Trump का 50% टैरिफ लागू: भारत पर प्रभाव / Trump's 50% tariff implemented: Impact on India

संदर्भ:

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय सामान पर 50% टैरिफ लगाने का ऐलान किया है, जो प्रभावी हो गया है। इससे पहले अमेरिका पहले ही भारतीय उत्पादों पर 25% टैरिफ वसूल रहा था। साथ ही, रूस से तेल खरीदने पर भारत पर 25% अतिरिक्त टैरिफ भी लगाया गया है, जो भारत-यूएस व्यापार और ऊर्जा आयात पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

अमेरिका के नए टैरिफ और भारत पर संभावित प्रभाव –

सबसे अधिक प्रभावित सेक्टर:

- **रत्न-आभूषण, चमड़ा, फर्नीचर, झींगा (सी फूड) और कपड़ा उद्योग** सबसे अधिक प्रभावित होंगे।
- ये सेक्टर अमेरिकी बाजार पर बहुत निर्भर हैं, इसलिए टैरिफ से **निर्यात क्षमता और रोजगार पर सीधे असर** पड़ेगा।
- राहत की बात: **इलेक्ट्रॉनिक्स, पेट्रोलियम उत्पाद और फार्मास्युटिकल सेक्टर** फिलहाल टैरिफ से मुक्त हैं।

संबंधित सेक्टरों पर संभावित असर

मशीनरी और ऑटो पार्ट्स:

- 2024 में भारत ने अमेरिका को बड़ी मात्रा में इंजीनियरिंग गुड्स और ऑटो पार्ट्स निर्यात किए।
- नए टैरिफ से **करीब ₹30,000 करोड़ का निर्यात प्रभावित** होगा।
- SMEs (निर्यात का 40%) सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

इलेक्ट्रॉनिक्स:

- अमेरिका को $14 बिलियन मूल्य के इलेक्ट्रॉनिक्स, खासकर iPhone, निर्यात होते हैं।
- वर्तमान में छूट है, पर सेक्शन 232 टैरिफ लागू होने पर **50% तक शुल्क** लग सकता है।
- इससे भारतीय स्मार्टफोन्स महंगे होंगे और कंपनियों को उत्पादन दूसरे देशों में शिफ्ट करना पड़ सकता है।

फार्मास्युटिकल्स:

- अमेरिका भारतीय जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा आयातक है।
- 2024 में भारत ने $10.5 बिलियन की दवाएं निर्यात कीं।
- ट्रम्प ने 150%-250% टैरिफ की धमकी दी, जिससे दवाओं की कीमतें दोगुनी हो सकती हैं।
- भारतीय कंपनियों जैसे **Sun Pharma, Cipla** को भारी नुकसान का खतरा।

जेम्स और ज्वेलरी:

- भारत अमेरिका के डायमंड और ज्वेलरी निर्यात का प्रमुख सप्लायर।
- 2024 में $10 बिलियन का निर्यात; नए टैरिफ से **50% शुल्क**।
- निर्यात में 15-30% तक गिरावट का अनुमान।
- कंपनियां अब **दुबई और मेक्सिको** में उत्पादन केंद्र बनाने पर विचार कर रही हैं।

टेक्सटाइल:

- 2024 में $10 बिलियन मूल्य के टेक्सटाइल निर्यात।
- नए टैरिफ से कीमतें **50% तक बढ़ सकती हैं**, जिससे मांग में 20-25% गिरावट और अमेरिकी बाजार में हिस्सेदारी घट सकती है।

सी फूड (झींगा और मछली):

- भारत का अमेरिका को निर्यात लगभग 40% है।
- 50% टैरिफ से ₹24,000 करोड़ तक का नुकसान संभव।
- अन्य देश (इक्वाडोर, इंडोनेशिया, वियतनाम) कम शुल्क का लाभ उठाकर भारत की हिस्सेदारी घटा सकते हैं।

भारत के निर्यात प्रोत्साहन प्रयास :

नई पहल का उद्देश्य

- निर्यातकों को सहूलियत और वित्तीय समर्थन देना।
- अमेरिका और अन्य देशों के टैरिफ और व्यापार बाधाओं के प्रभाव को कम करना।
- 'ब्रांड इंडिया' को वैश्विक स्तर पर मजबूत बनाना।

मुख्य विशेषताएँ-

1. **आर्थिक पैकेज:** लगभग ₹20,000 करोड़ का व्यापक निर्यात प्रोत्साहन कार्यक्रम।
2. **प्राथमिक क्षेत्र:**
   - ट्रेड फाइनेंस की सुविधा बढ़ाना।
   - अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक आसान पहुंच।
   - ब्रांड इंडिया की वैश्विक पहचान को मजबूत करना।
   - आधुनिक ई-कॉमर्स हब का निर्माण।
   - वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के उपाय।
3. **सहूलियतें:**
   - टेस्टिंग फीस में छूट।
   - कस्टम्स प्रक्रियाओं को सरल बनाना।
   - बेहतर लॉजिस्टिक और सप्लाई चैन समर्थन।

प्रभाव

- निर्यातक कंपनियों की लागत कम होगी।
- अमेरिकी और अन्य देशों के टैरिफ के दबाव में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त।
- छोटे और मझोले उद्योगों (SMEs) को नई वैश्विक बाजारों तक पहुंच।

साइ-हब प्रतिबंध और 'एक राष्ट्र, एक सदस्यता' योजना / Sci-Hub Ban and the 'One Nation, One Subscription' Scheme

संदर्भ:

दिल्ली हाईकोर्ट ने कॉपीराइट उल्लंघन मामले में सख्त रुख अपनाते हुए अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे ऑनलाइन शैडो लाइब्रेरीज़ **Sci-Hub, Sci-Net और उनके मिरर डोमेन्स** तक पहुंच को तुरंत ब्लॉक करें। अदालत का यह फैसला बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा और अवैध रूप से उपलब्ध कराए जा रहे शोध सामग्री के प्रसार पर रोक लगाने के उद्देश्य से लिया गया है।

साइ-हब (Sci-Hub) के बारे में:

यह क्या है?

- साइ-हब की स्थापना 2011 में अलेक्ज़ेंड्रा एलबाक्यान ने की थी।
- यह एक **मुफ़्त ऑनलाइन रिपॉज़िटरी** है जिसमें लाखों रिसर्च पेपर उपलब्ध हैं।
- यह **पेवाल (Paywall)** को बायपास करके ऐसे शोध पत्र उपलब्ध कराता है, जो सामान्यत: केवल सब्सक्रिप्शन पर मिलते हैं।
- विकासशील देशों के **छात्रों, शोधार्थियों और स्वतंत्र विद्वानों** के बीच यह बेहद लोकप्रिय है।

साइ-हब मामला (The Sci-Hub Case):

- **कानूनी चुनौती:** Elsevier, Wiley और American Chemical Society (ACS) ने Sci-Hub पर **कॉपीराइट उल्लंघन** का मुकदमा दायर किया। दिल्ली उच्च न्यायालय (Delhi HC) ने एलबाक्यान को पहले दिए गए आश्वासन का उल्लंघन करने पर **अवमानना** का दोषी ठहराया।
- **परिणाम:** इंटरनेट सेवा प्रदाताओं (ISPs) को Sci-Hub और उससे जुड़े पोर्टल्स को **ब्लॉक करने का आदेश** दिया गया।
- **महत्त्व:** इस फैसले ने **बौद्धिक संपदा अधिकारों (Intellectual Property Rights)** को बरकरार रखा, लेकिन यह सवाल अधूरा छोड़ दिया कि भारत में सामान्य शोधकर्ताओं को **सुलभ और किफायती रिसर्च सामग्री** कैसे उपलब्ध कराई जाए।

वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन (ONOS) योजना:

प्रारंभ: 2024 (पहला चरण 2023-26 तक संचालित)

बजट: ₹6,000 करोड़

कार्यान्वयन एजेंसियाँ:

- **INFLIBNET (UGC की संस्था):** डिजिटल एक्सेस का प्रबंधन
- **ANRF (अनुसंधान राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन):** उपयोग और प्रकाशनों की निगरानी

कवरेज:

- **चरण I:** सार्वजनिक विश्वविद्यालय और शोध संस्थान
- **चरण II:** निजी संस्थान और कॉलेज

दायरा: 30 अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों (Oxford, Cambridge, Elsevier, Lancet आदि) से लगभग 13,000 जर्नल्स तक पहुंच

उद्देश्य:

- शोध सामग्री तक सार्वभौमिक और वैध पहुंच सुनिश्चित करना
- पायरेसी पर निर्भरता कम करना
- शोधकर्ताओं पर भारी *Article Processing Charges (APCs)* का बोझ घटाना

ONOS योजना के लाभ:

1. **समान पहुंच (Equitable Access):** टियर-1 से टियर-3 संस्थानों तक सभी शोधकर्ताओं को बराबर अवसर मिलेगा।
2. **शोध की गुणवत्ता में सुधार (Boost to Research Quality):** उच्च प्रभाव वाले जर्नल्स में प्रकाशन आसान होगा।
3. **वैश्विक सहयोग (Global Collaboration):** भारतीय शोधकर्ताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग में बाधाएं कम होंगी।
4. **लागत में दक्षता (Cost Efficiency):** केंद्रीकृत सब्सक्रिप्शन से संस्थानों के खर्च में दोहराव नहीं होगा।
5. **नवाचार को प्रोत्साहन (Innovation Ecosystem):** स्टार्टअप, उद्योग R&D और नीति निर्माण को उच्च गुणवत्ता वाले ज्ञान से सहयोग मिलेगा।

कार्बन बाज़ारों के लिए राष्ट्रीय नामित प्राधिकरण / National Designated Authority for Carbon Markets

संदर्भ:

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने '**नेशनल डिज़िग्नेटेड अथॉरिटी (NDA)**' की स्थापना की घोषणा की है। यह 2015 के **पेरिस समझौते** के प्रावधानों के तहत एक अनिवार्य व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य देश में **कार्बन उत्सर्जन ट्रेडिंग व्यवस्था** को लागू करना और जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयासों को मजबूती देना है।

परिचय (About):

यह 2015 के **पेरिस समझौते (Paris Agreement)** के प्रावधानों के तहत एक अनिवार्य आवश्यकता है।

पेरिस समझौते के भीतर, **अनुच्छेद 6 (Article 6)** उस ढाँचे को परिभाषित करता है जिसके तहत उत्सर्जन व्यापार व्यवस्था (emissions trading regime) या बाजार का स्वरूप तय किया जा सकता है।

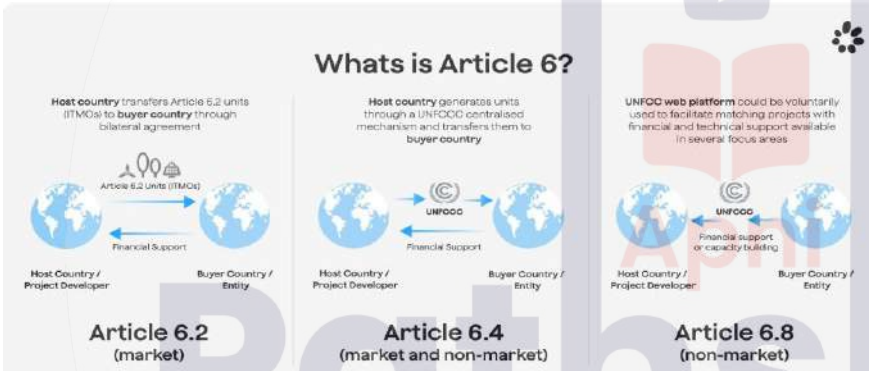

संरचना (Composition):

- **21 सदस्यीय समिति**, जिसकी अध्यक्षता **पर्यावरण मंत्रालय के सचिव** करते हैं।
- इसमें विदेश मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, नीति आयोग (NITI Aayog) और इस्पात मंत्रालय के अधिकारी शामिल हैं।

कार्य (Functions of NDA):

1. केंद्र सरकार को उन गतिविधियों की सूची की सिफारिश करना जिन्हें परियोजनाओं से उत्सर्जन कटौती इकाइयों (emission reduction units) के व्यापार के लिए माना जा सकता है।
2. समय-समय पर इन गतिविधियों में बदलाव करना, ताकि वे राष्ट्रीय सतत विकास लक्ष्यों (sustainable goals), देश-विशेष मानदंडों और अन्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप रहें।
3. परियोजनाओं या गतिविधियों को मूल्यांकन, अनुमोदन और प्राधिकरण के लिए प्राप्त करना।
4. परियोजनाओं से प्राप्त उत्सर्जन कटौती इकाइयों को **राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC)** की प्राप्ति के लिए प्रयोग करने की अनुमति प्रदान करना।

राष्ट्रीय नामित प्राधिकरण (NDA) के कार्य:

- **परियोजना स्वीकृति (Project Approval):** उत्सर्जन कमी इकाइयाँ (ERUs) उत्पन्न करने वाली परियोजनाओं का मूल्यांकन और अनुमोदन करना।
- **राष्ट्रीय मानदंड (National Criteria):** भारत के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप उन गतिविधियों की अनुशंसा करना जो ट्रेडिंग के योग्य हों।
- **निगरानी (Monitoring):** राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और जलवायु प्रतिबद्धताओं के अनुसार पात्र गतिविधियों को समय-समय पर अद्यतन और संशोधित करना।
- **कार्बन क्रेडिट उपयोग (Carbon Credit Use):** भारत के NDC लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ERUs के उपयोग की अनुमति देना।
- **अंतरराष्ट्रीय भूमिका (International Role):** आर्टिकल 6 ढांचे के अंतर्गत भारत का प्रतिनिधित्व करना और अन्य देशों के साथ क्रेडिट ट्रांसफर को सुगम बनाना।

भारत के लिए NDA का महत्व:

- **NDC लक्ष्यों को समर्थन (Supports NDCs):** भारत की प्रतिबद्धता—2005 के स्तर से 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता में 45% कमी—को पूरा करने में मदद करता है।
- **स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा (Boosts Clean Energy):** नवीकरणीय और कम-कार्बन परियोजनाओं में निवेश को प्रोत्साहित करता है।

कार्बन मार्केट्स (Carbon Markets):

- **परिभाषा:** कार्बन मार्केट्स ऐसे *ट्रेडिंग सिस्टम* हैं, जिनमें **कार्बन क्रेडिट्स** की खरीद-बिक्री होती है।
- **उद्देश्य:** कंपनियाँ या व्यक्ति अपनी ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन की भरपाई (compensate) करने के लिए इन क्रेडिट्स को खरीद सकते हैं।
- **कार्बन क्रेडिट का अर्थ:** एक कार्बन क्रेडिट = **एक टन कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)** या उसके बराबर किसी अन्य ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन घटाना, रोकना या अवशोषित (sequester) करना।

इनीप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र / Dnipropetrovsk Region

संदर्भ:

रूसी सेनाओं ने **डनिप्रोपेट्रोव्स्क क्षेत्र** में स्थित कई गांवों पर क जा कर लिया है। यह कदम रूस-यूक्रेन युद्ध के मोर्चे पर एक नई रणनीतिक प्रगति माना जा रहा है।

इनीप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्र (Dnipropetrovsk Region)

स्थान एवं भौगोलिक स्थिति

- यह क्षेत्र पूर्वी यूक्रेन के इनीप्रोपेत्रोव्स्क ओब्लास्ट (Oblast) में स्थित है।
- इनीपर नदी (Dnieper River) के दोनों किनारों पर बसा है, जहाँ इसका संगम समारा नदी (Samara River) से होता है।
- दायाँ किनारा: इनीपर अपलैंड (Dnieper Upland) का हिस्सा।
- बाँया किनारा: इनीपर लो-लैंड (Dnieper Lowland) का हिस्सा।

जनसंख्या एवं क्षेत्रफल

- क्षेत्रफल: 7 वर्ग किमी।
- जनसंख्या (2021): 9,80,948 (कीव, खारकीव और ओडेसा के बाद यूक्रेन का चौथा सबसे बड़ा शहर)।

औद्योगिक महत्व

- यूक्रेन का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र।
- प्रमुख क्षेत्र:
  - एयरोस्पेस (लॉन्च वाहन निर्माण)
  - धातु कार्य (metalwork)
  - मशीनरी
  - रासायनिक उत्पादन
  - कृषि उपकरण

सैन्य संदर्भ

- रूस की इनीप्रोपेत्रोव्स्क में प्रगति यह दर्शाती है कि महीनों की असफलताओं के बाद उसे युद्धक्षेत्र में गति मिली है।
- यह कदम यूक्रेन, यूरोपीय संघ और अमेरिका की युद्धविराम की अपील को अस्वीकार करने का संकेत है, जिससे शांति प्रयास और जटिल हो जाते हैं।

न्यू वर्ल्ड स्क्रूवॉर्म / New World Screwworm

संदर्भ:

अमेरिकी स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग (Department of Health and Human Services) ने संयुक्त राज्य अमेरिका में पहली बार मांस-खाने वाले परजीवी "न्यू वर्ल्ड स्क्रूवॉर्म" (New World Screwworm) के मानव संक्रमण का मामला दर्ज किए जाने की पुष्टि की है।

न्यू वर्ल्ड स्क्रूवॉर्म (New World Screwworm)

परिचय:

- न्यू वर्ल्ड स्क्रूवॉर्म (**Cochliomyia hominivorax**) एक प्रकार की **नीला-धूसर ब्लोफ़्लाई (blue-grey blowfly)** है।
- यह मुख्यत: **साउथ अमेरिका और कैरिबियन** क्षेत्र में पाया जाता है।

जीवनचक्र और संक्रमण:

1. **अंडे देना:** मादा स्क्रूवॉर्म गर्म रक्त वाले जानवरों (और कभी-कभी इंसानों) के **खुले घाव या नाक जैसी एंट्री पॉइंट** पर अंडे देती है।
2. **लार्वा का विकास:** अंडे से **लार्वा (मैग्गोट्स)** निकलते हैं, जो घाव में जाकर **जिंदा मांस खाकर वृद्धि करते हैं**।
3. **परिपक्वता:** भोजन पूरा होने के बाद, लार्वा **मिट्टी में गिरकर दब जाता है** और वहाँ से विकसित होकर **वयस्क ब्लोफ़्लाई बनता है**।

प्रभाव और रोग:

- लार्वा का जीवित ऊतक में संक्रमण **मायसियास** कहलाता है।
- न्यू वर्ल्ड स्क्रूवॉर्म का संक्रमण **दर्दनाक और गंभीर** होता है।
- यदि समय पर उपचार न किया जाए, तो **उच्च मृत्यु दर (high mortality rate)** हो सकती है।

नोट: यह रोग मुख्यत: **पशुओं में प्रचलित** है, इंसानों में दुर्लभ होता है।

पार्किंसन रोग / Parkinson's Disease

संदर्भ:

मोहाली स्थित इंस्टिट्यूट ऑफ नैनो साइंस एंड टेक्नोलॉजी (INST) के शोधकर्ताओं ने एक नैनो-टेक्नोलॉजी आधारित बायोसेंसर विकसित किया है, जो पार्किंसन रोग (Parkinson's Disease) का पता उसके लक्षण दिखाई देने से पहले ही लगा सकता है।

पार्किंसन रोग क्या है?

- पार्किंसन रोग (Parkinson's Disease - PD) एक प्रगतिशील (progressive) न्यूरोडीजेनेरेटिव विकार है, जो मुख्य रूप से गति और शरीर के नियंत्रण (movement & motor control) को प्रभावित करता है।
- यह रोग मस्तिष्क में डोपामिन बनाने वाली कोशिकाओं के नष्ट होने से होता है।
- इसका संबंध α-synuclein प्रोटीन के असामान्य रूप से मुड़ने और इकट्ठा होने (misfolding & aggregation) से है। यह प्रोटीन मस्तिष्क में विषैले गुच्छे (toxic clumps) बना देता है, जिससे न्यूरॉन्स को नुकसान पहुंचता है।
- इसके प्रमुख लक्षण हैं – कंपकंपी (tremors), मांसपेशियों में कठोरता (rigidity), गति में धीमापन (slowness of movement), और संतुलन।

यह कैसे काम करता है?

वैज्ञानिकों ने **गोल्ड नैनोक्लस्टर्स (Gold Nanoclusters - AuNCs)** विकसित किए हैं। ये अत्यंत छोटे, **चमकदार कण** होते हैं जिनका आकार कुछ नैनोमीटर ही होता है।

1. इन नैनोक्लस्टर्स को **प्राकृतिक अमीनो एसिड** से कोट किया गया है, ताकि वे **विशेष प्रोटीन को पहचान सकें।**
2. **प्रोलाइन (Proline)-कोटेड क्लस्टर्स** सामान्य (monomeric) α-synuclein प्रोटीन से जुड़ते हैं, जो हानिरहित है।
3. **हिस्टिडिन (Histidine)-कोटेड क्लस्टर्स** विषैले (toxic) और एकत्रित (amyloid) रूप वाले α-synuclein प्रोटीन से जुड़ते हैं, जो पार्किंसन रोग का कारण बनते हैं।

कानी जनजाति / Kani Tribe

संदर्भ:

हाल ही में कुट्टिमाथन कानी, जो कानी जनजातीय समुदाय से ताल्लुक रखते थे और औषधीय पौधे "आरोग्यपाचा" (Arogyapacha) के रहस्य का खुलासा करने वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे, उनका निधन हो गया है।

कानी जनजाति (Kani Tribe):

परिचय: कानी जनजाति, जिन्हें **कानिकारार (Kanikkarars)** भी कहा जाता है, पारंपरिक रूप से **आदिवासी एवं खानाबदोश** समुदाय थे।

- आज ये लोग **केरल के तिरुवनंतपुरम जिले में पश्चिमी घाट की अगस्त्यमलाई पहाड़ियों** के जंगलों में स्थायी जीवन जीते हैं।

सामुदायिक संगठन:

- हर कानी गाँव में **समुदायिक परिषद (Community Council)** होती है, जो सामाजिक नियंत्रण बनाए रखती है।
- परिषद में शामिल हैं:
  - **मूट्टुकानी (Moottukani)** – जनजाति प्रमुख
  - **विलिकानी (Vilikani)** – संयोजक
  - **पिलाथी (Pilathi)** – चिकित्सक और पुरोहित
- ये पद **वंशानुगत (Hereditary)** होते हैं।

परंपरागत संरचना और भूमिका:

- **मूट्टुकानी**: कानून बनाने वाला, संरक्षक, न्यायदाता, चिकित्सक और पुरोहित सभी का कार्य करता था।
- **पिलाथी**: जादुई शक्तियों वाला माना जाता है, विभिन्न **अनुष्ठान और मंत्र** करता है, इसमें **'कोकारा (Kokara)'** नामक यंत्र का उपयोग होता है।

आवास और जीवनशैली:

- आज कानी लोग कई **जनजातीय बस्तियों (tribal hamlets)** में रहते हैं।
- हर बस्ती में **10–20 परिवार** रहते हैं, जो जंगल और आसपास के क्षेत्रों में बिखरे होते हैं।

सांस्कृतिक महत्व:

- कानी जनजाति की **जड़ी-बूटी और औषधीय ज्ञान** विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- उनके पारंपरिक जीवन और सामाजिक संगठन में सामूहिक और समन्वित ढांचा देखा जाता है।

GS FOUNDATION For

UPSC & STATE PSC

- इतिहास
- अर्थव्यवस्था
- भूगोल
- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

1500x4
~~₹6000/-~~

₹4500/-

- रोज़ाना लाइव क्लासेस
- साप्ताहिक टेस्ट
- क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
- लाइव डाउट सेशन
- रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न

COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazaar ki
एक निवेश समझदारी से..

Baaten Bazar Ki
FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)

FREE

EMI AVAILABLE

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR